PAPER - I

Question:→ शिक्षण के अन्तर्दृष्टि या सूझ सिद्धान्त (Insight Theory of Learning) की विवेचना करें

Ans:- सीखने के अन्तर्दृष्टि या सूझ सिद्धान्त का प्रतिपादन कोहलर (Kohler), कोफ्का (Koffka) आदि गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहारवादी सिद्धान्तों जिनमें, थार्नडाइक के प्रसिद्ध प्रत्यन-त्रुटि-सिद्धान्त के विरोध में किया है।

अन्तर्दृष्टि का साधारण अर्थ सूझ है। इस सिद्धान्त के अनुसार अन्तर्दृष्टि या सूझ के बिना सीखना संभव नहीं है। किसी तरह के सूझ के बिना केवल अभ्यास या प्रयत्न करने से सीखने में कोई लाभ नहीं होता। इस सिद्धान्त का कहना है कि जब जीव किसी उलझनपूर्ण परिस्थिति में रख दिया जाता है तब वह परिस्थिति के विभिन्न अंगों में सम्बन्ध स्थापित कर उन्हें समझने की कोशिश करता है। जब पूरी परिस्थिति उसकी समझ में आ जाती है तब उसमें अचानक अन्तर्दृष्टि या सूझ (Insight) आती है और वह तुरन्त सही अनुक्रिया (correct response) कर डालता है। इस तरह, अन्तर्दृष्टि- सिद्धान्त के अनुसार, सीखना क्रमशः (gradual) नहीं, बल्कि एकाएक या सहसा (Sudden) हो जाता है। परिस्थिति का ज्ञान पाने के लिए बार-बार प्रयास करना जरूरी नहीं है, कभी-कभी एक ही बार में परिस्थिति की सूझ मिल जाती है। परिस्थिति को समझने के क्रम में जीव की कोई भी क्रिया बिल्कुल निरर्थक या यादृच्छिक (Random) नहीं होती, बल्कि उसमें सूझ का कुछ-न-कुछ अंश रहता है। परिस्थिति को समझने के क्रम में जो भूल होती है, उन्हें भी कोहलर निरर्थक नहीं मानता। उसके अनुसार, वे भूलें दो तरह की होती हैं (i) अच्छी भूलें (good errors), तथा (ii) बुरी भूलें (bad errors)। अच्छी भूलें परिस्थिति को समझने में सहायता करती है, और व्यक्ति को परिस्थिति सुलझाने की सूझ मिल जाती है। इस तरह, इस सिद्धान्त की मुख्य बातें हैं :-

1. सीखने की क्रिया अन्तर्दृष्टि के कारण सहसा होती है।
2. सीखने में निरर्थक क्रियाएँ नहीं होतीं, और
3. सीखने के लिए अभ्यास करना जरूरी नहीं है।

अन्तर्दृष्टि-सिद्धान्त कई प्रयोगों पर आधारित है। यहाँ कोहलर द्वारा किये गये दो प्रसिद्ध प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है।-

(क) छड़ी-समबन्धी समस्या :- कोहलर ने यह प्रयोग सुल्तान नामक एक तेज बुद्धि के वनमानुष पर किया। वनमानुष को

एक पिंजरे में बन्द कर दिया गया। पिंजरे के बाहर थोड़ी दूर पर एक केला रख दिया गया। पिंजरे में दो छड़ियाँ रखी थीं। वनमानुष भूखा था, इसलिए केला देखते ही उसने उसे पाने की कोशिश की। शुरू में उसने हाथ-पैर फैलाकर उसे पाना चाहा। पर, केला काफी दूर था, अतः वह वहाँ तक पहुँच न सका। तब सुल्तान ने एक-एक कर दोनों छड़ियों को उठाया और उनसे केला खींचना चाहा (इसके पहले वह लकड़ी से केला खींचना सीख चुका था) लेकिन, दोनों में कोई भी छड़ी इतनी बड़ी नहीं थी कि केले तक पहुँचे। अतः वनमानुष बहुत प्रयत्न करने पर भी केला नहीं खींच सका। तब उसने यह प्रयत्न भी बन्द कर दिया और उन छड़ियों से खेलने लगा। खेलते-खेलते सहसा (Suddenly) एक छड़ी का छोर दूसरी छड़ी के छोर से जुट गया। अब छड़ी काफी लम्बी हो गयी। यह देख सुल्तान का उत्साह बढ़ गया। उसने कुछ ही प्रयास में छड़ियों को ठीक से जोड़ लिया और जुटी छड़ी के सहारे केले को खींच कर खा लिया। दूसरे दिन जब पुनः इस प्रयोग को दुहराया गया तो बिना अधिक समय लगाये उसने छड़ियों को जोड़कर उनके सहारे केले को खींच लिया।

कोहलर के अनुसार ~~कोहलर ने~~ वनमानुष ने दो छड़ियों को जोड़ने और उनके सहारे केले को पाना सूझ के द्वारा सीखा। उसे यह सूझ अचानक या सहसा (Sudden) मिली। इस सूझ के मिलने से पहले वनमानुष पिंजरे की परिस्थिति, छड़ी की लम्बाई और केले की दूरी के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। ज्योंहि इन चीजों के बीच सम्बन्ध मालूम हुआ, त्योंही उसे केला पाने की सूझ (Insight) आ गयी। इस तरह, छड़ियों को जोड़कर केला पाने की समस्या को वह सूझ के द्वारा सुलझा पाया।

(ख) बम्स-सम्बन्धी समस्या पर प्रयोग :-

कोहलर ने अपने इस प्रसिद्ध प्रयोग में एक भूखे वनमानुष को कमरे में बन्द कर दिया। कमरे की छत से एक केला लटका दिया गया था।